श्रीमद्भगवद्गीता को 'गीतोपनिषद्' भी कहा जाता है। यह सम्पूर्ण वैदिक साहित्य की सर्वप्रधान उपनिषद् है, वस्तुतः वैदिक ज्ञान का सार-सर्वस्व ही है। गीता पर अनेक भाष्य उपलब्ध हैं। अतएव पाठक के हृदय में इस नवीन संस्करण के प्रयोजन-विषयक जिज्ञासा का उदय होना स्वाभाविक होगा। इस वर्तमान संस्करण का अभिप्राय इस प्रकार समझाया जा सकता है। कुछ दिन हुए एक सज्जन ने मुझ से आग्रह किया कि मैं भगवद्गीता के किसी अनुवाद का परामर्श दूँ। निस्सन्देह भगवद्गीता के अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं; पर जहाँ तक मेरा अनुभव है, उनमें से किसी को भी प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, क्योंकि प्रायः किसी भी भाष्यकार ने भगवद्गीता की आत्मा को यथार्थ रूप में (यथारूप) प्रस्तुत नहीं किया है; वरन् सबने उस पर अपना निजी मत आरोपित किया है।

भगवद्गीता की आत्मा का निरूपण भगवद्गीता में ही है। वह इस प्रकार है: किसी विशेष औषधी का सेवन उस पर लिखित आदेश के अनुसार ही किया जाता है। हम स्वेच्छा से अथवा मित्र के परामर्श पर उसे नहीं ले सकते। उस पर लिखी विधि अथवा चिकित्सक के निर्देशानुसार ही औषधी का सेवन करना होगा। इसी भाँति, भगवद्गीता को उसी प्रकार ग्रहण करना है, जैसा कि स्वयं गीतागायक ने उसका प्रवचन किया है। भगवद्गीता के वक्ता भगवान् श्रीकृष्ण हैं। उन्हें भगवद्गीता के प्रत्येक पृष्ठ पर **भगवान् कहा गया है। निस्संदेह 'भगवान्' शब्द** कभी-कभी शक्तिशाली महापुरुष अथवा देवता के लिए भी प्रयुक्त होता है। गीता में 'भगवान्' शब्द श्रीकृष्ण को महापुरुष तो घोषित करता ही है; परन्तु साथ में यह भी स्मरण रखना चाहिए कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् (आदिपुरुष) हैं। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्क स्वामी, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा वैदिक ज्ञान के अन्य सभी आचार्यों ने इस सत्य को प्रमाणित किया है। श्रीकृष्ण ने भी गीता में अपने को परात्पर परमेश्वर, परब्रह्म भगवान् घोषित किया है। ब्रह्मसंहिता तथा सभी पुराणों ने, विशेषतः श्रीमद्भागवत ने उनकी परात्परता को एक स्वर से स्वीकार किया है—**कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्**। अतएव हम भगवद्गीता को उसी रूप में ग्रहण करें, जिस रूप में श्रीभगवान् ने उसे कहा है।

गीता के चौथे अध्याय में श्रीभगवान् ने कहा है—

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत।।
एवं परम्पराप्राप्तं इमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप।।
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।।

श्रीभगवान् अर्जुन को सूचित करते हैं कि इस योगपद्धति अर्थात् भगवद्गीता का प्रवचन उन्होंने सर्वप्रथम सूर्यदेव को किया। सूर्यदेव ने इसे मनु को सुनाया और